बी॰ए॰ भाग-2
हिन्दी-रचना

रमेश कुमार यादव
हिन्दी विभाग
डी॰के॰ कालिज डुमराँव
बक्सर (बिहार)

"पृथ्वीराज की आँखें" - डॉ॰ रामकुमार वर्मा

भाव और शैली दोनों दृष्टियों से विशिष्ट एकांकी 'पृथ्वीराज की आँखें' में एकांकीकार डॉ॰ रामकुमार वर्मा ने प्रशंसनीय कलात्मक दक्षता का परिचय दिया है। वस्तुतः यह एकांकी ऐतिहासिक तथ्य से परे एक नाटक का प्रस्ताव है। इसकी मूल कथा इतनी है कि महाकवि चन्दवरदाई रचित वीरगाथात्मक महाकाव्य पृथ्वीराज रासो के छियासठवें और सड़सठवें समयों पर आधारित पृथ्वीराज की देशभक्ति, देशाभिमान, स्वाभिमान, शब्दवेधा में उनकी निपुणता, दृढ़ निश्चय, शौर्य और पराक्रम का प्रभावोत्पादक उल्लेख हुआ है।

शहाबुद्दीन गोरी ने युद्ध में परास्त कर पृथ्वीराज को गोरी के बन्दीगृह में कैद कर रखा है। इस समय पृथ्वीराज की अवस्था मात्र पैंतीस वर्ष की है। उसके शरीर से अब भी एक विचित्र आभा फूट रही है। चढ़ी हुई मूछें और रोबिला चेहरा। उसके हाथों में हथकड़ी है। हथकड़ी का एक छोर उनके पैरों से लगक रहा है, जो हाथों के संचालन मात्र से झुलकर शब्द करने लगते हैं। उनके बाल बिखरे हुए हैं। दाढ़ी बढ़ी हुई है और वस्त्र गन्दे हैं। कहीं-कहीं जलने के निशान भी पड़ गए हैं।

वह असहनीय यातना भुगत रहा है। कवि चन्द उनसे मिलने आते हैं। उनकी स्थिति को देखते ही चन्द की आखें भर आती हैं। वह पृथ्वीराज से कुछ कहना चाहता है। लेकिन पृथ्वीराज के अन्तस्तल में हाहाकार मचा हुआ है। कवि चन्द के

कुछ पूछने से पहले ही पृथ्वीराज कहते है– "मत पूछो, कुछ मत पूछो। जिस क्षण ने पृथ्वीराज को पृथ्वीराज नहीं रहने दिया, उसकी उस निर्दय क्षण की बात मत पूछो। बड़ी कठिनाई से उस कष्ट को भुला सका हूँ।" चार मशालची और उनका सरदार जो हाथ में एक छूरा लिये था आया और मेरी आँखों में दो सूजे से छेद कर डाला।

मैं नि:सहाय था। अब आगे जीने की कोई लालसा नहीं है। तुम यदि मेरे सच्चे मित्र हो तो निकालो अपनी तलवार और फाड़ दो मेरा यह वक्षस्थल। क्योंकि पृथ्वीराज के गौरव से गिरे हुए इस प्राणी को अब प्राण की आवश्यकता नहीं रही। जीवन का एक-एक क्षण तलवार की धार से बहुत अधिक पैना है।

कवि चन्द पृथ्वीराज की वेदनापूर्ण वाणी को सुनकर अधीर हो उठता है। उसके हाथ से तलवार गोरी के आदेश पर दरवाजे पर ही छीन लिए गये थे परन्तु छाती में छिपाकर कटार लेकर किसी तरह वहाँ तक पहुँच पाया था। वह कटार निकालने लगता है, तभी गोरी आ जाता है और कटार छीन लेता है। वह पृथ्वीराज को व्यंग्य-बाण से बेंधने लगता है। पृथ्वीराज आहें भरकर रह जाता है। इसी बीच चन्द कहता है कि पृथ्वीराज आवाज पर तीर चलनि में अत्यन्त निपुण हैं। गोरी आश्चर्यचकित हो जाता है। वह पृथ्वीराज की अनोखी करिश्मा देखने की इच्छा प्रकट करता है। यहीं एकांकी के प्रथम दृश्य का पटाक्षेप हो जाता है।

एकांकी के दूसरे भाग में गोरी अपनी सभा में उपस्थित सामन्तों से पृथ्वीराज के तीरन्दाजी की बात कहते हैं। साथ ही यह भी कहते हैं कि हैरत-अंगेज बात यह है कि आवाज पर तीर मारने में आँख की जरूरत नहीं होती। हमने कैदी पृथ्वीराज की आँखें जला दी हैं। अब यह देखना है कि चन्दबरदाई की बात किस हद तक सच है। जुमे के दिन पृथ्वीराज को कत्ल करने की तिथि निश्चित की गई है। इस बीच गोरी चन्दबरदाई से पृथ्वीराज के विषय में कुछ बातचीत करते हैं।

पृथ्वीराज को सभा में लाया जाता है। गोरी के कहने पर सभी सभासद पृथ्वीराज के सम्मान में खड़े होते हैं। वह पृथ्वीराज से उनकी हालत पूछता है क्योंकि उसने उनकी फूटी आँखों में रात को नींबू का रस और नमक डलवाया था। गोरी की व्यंग्यपूर्ण बातों पर पृथ्वीराज हँसते हैं और भारतीय योग विद्या की महिमा का बखान करते हुए कहते हैं कि भारतीय योग से अपनी प्राण-शक्ति ब्रह्माण्ड में ले जाते हैं और शरीर को शून्य कर देते हैं। फिर शरीर को कष्ट कैसा? सर्प भी हमारे शरीर से लिपट कर काट ले तो हमें कोई कष्ट नहीं, सर्प काटकर स्वयं मर जाएगा आपने मेरी आँखें जलाकर उसमें नींबू और मिर्च डालकर सोचा कि इससे मुझे कष्ट होगा, नहीं भूल जाइए ये बातें। हमारे लिए शरीर का कष्ट कोई कष्ट नहीं।

गोरी पृथ्वीराज की तीरन्दाजी देखने के लिए अपने सिपाही से तीर-कमान देने का हुक्म देता है। फिर पृथ्वी-

राज से कहता है कि तीर जहर में डूबे हुए हैं। यहाँ से दायीं ओर बायीं तरफ लकड़ी की दो मीनारें बना दी गई हैं। इन पर कुछ सिपाही तैनात हैं। वे अपने साथ नगाड़े लिए हुए हैं। इशारा होने पर वे नगाड़े पर चोट करेंगे। नगाड़े की आवाज होने पर आपके तीर से उस नगाड़े में छेद हो जाना चाहिए। सिपाहियों को जरा भी चोट नहीं लगनी चाहिए। निशाने चूकने पर तुरन्त आपका कत्ल कर दिया जायेगा। गोरी की बातें सुनकर पृथ्वीराज ने कहा आप इसकी चिन्ता न करें। जैसा आपने कहा है वैसा ही होगा। सिपाही नगाड़े पर चोट करते ही पृथ्वीराज का तीर नगाड़े को छेदकर निकल जाता है। इस अजीबो-गरीब करतब पर सभी अचंभित हो जाते हैं।

इसी बीच चन्दबरदाई एक योजनानुसार एक नई चाल चलते हैं। गोरी से कहते हैं आप कैंप में जाकर छिप कर खड़े हो जाइए और वहीं से ताली बजाएँ तो आप देखेंगे कि महाराज का बाण किस तरह उस छिपे हुए स्थान पर पहुँचकर ताली की आवाज की वेध देता है। गोरी बिना सोचे समझे इसके लिए तैयार हो जाते हैं। पृथ्वीराज 'जय महाकाल' का घोष कर ताली की आवाज पर निशाना साधते हैं और गोरी का काम तमाम कर देते हैं। शीघ्रतापूर्वक दौड़कर चन्द पृथ्वीराज के पास जाते हैं और उन्हें एक कटार देते हुए कहते हैं कि यह कटार मेरे सीने में घोंप दीजिए और मैं आपके सीने में घोंप देता हूँ। ऐसा ही दोनों करते हैं। इस तरह दोनों ही अपने देश के ऋण से उऋण हो जाते हैं।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट - प्रोफेसर
हिन्दी - विभाग
डी. के. कालेज, डुमराँव
बक्सर (बिहार)